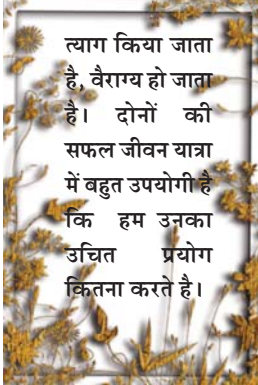


त्याग के मायने

प्रश्न: आपके लिए त्याग का क्या अर्थ है? उत्तर: जब बच्चों को कुछ अच्छा मिलता है, तो वे पहले की छोटी वस्तुएं त्याग देते हैं, ऐसे ही कमियों और निगेटिविटी का त्याग चलते रहना चाहिए, ऐसा नहीं है कि हम एक बार त्याग देते हैं तो वह खत्म हो जाता है। जब हमारे पास किसी बात को त्यागने का काम करने के लिए समझ, हिम्मत और शक्ति होती है तो हम बहुत उमंग में आते हैं और तभी परीक्षाएं आती हैं।



पहले तो यह समझना पड़ेगा कि किसी बात को क्यों त्यागना चाहते हैं? यह समझ अपने दिल में बहुत क्लियर होनी चाहिए और उसे त्यागना आपके लिए आवश्यक होना चाहिए। हम त्याग का निर्णय तो कर लेते हैं किन्तु समय प्रति समय हम देखते हैं कि बातें बार-बार अलग रूपों में उभर कर आती हैं और तब हम पहचानते हैं कि अभी त्यागना बाकी है। त्याग बिना कारण नहीं होता। जो हम सीख रहे हैं, यदि आप उसकी फिलॉसॉफी देखें-स्वयं को स्वीकारना कि मैं आत्मा पहले एक पवित्र आत्मा थी और उसमें कोई कमियां या निगेटिविटी नहीं थी- इस लिए उन्हें त्यागने की आंतरिक इच्छा होती है। तो हम पहले त्याग करने की हिम्मत रखने का सोचते हैं और फिर कोई हमें उसे बाबा को दे देने के लिए प्रेरित करता है, एक कागज का टुकड़ा लेकर बाबा को लिख दो, एक बार उसे बाबा को दे दिया, तो बाबा आपको प्रोत्साहन दिलाते कहता है कि उसे वापस न लें और यदि वह आ भी जाए तो दोबारा बाबा को दे दें। बाबा का बार-बार आह्वान करें, ताकि आपके दिल में और आपके मन में बाबा की उपस्थिति हो और आपके पास उस बात को त्यागने की हिम्मत और शक्ति हो। ऐसे यह प्रक्रिया शुरू होती है।

प्रश्न: त्याग के लिए आंतरिक शक्ति और हिम्मत चाहिए होती, समय कम है। अपनी यात्रा से क्या कोई शॉर्ट कट है, वैसे यह एक लम्बी प्रक्रिया है?

उत्तर: अपनी यात्रा के बारे में बात करते हुए मैं आपको यह बता सकता हूँ कि हम पहचान जाते हैं कि हमारे लिए क्या अच्छा नहीं है और उसे त्यागने का निर्णय लेते हैं। थोड़ी सी कुछ सूक्ष्म बातें हैं जो हमें यह समझने से रोकती हैं कि कोई बात क्यों हुई। आप अपने

क्रोध को त्यागने का संकल्प करते हैं या अपनी कोई बहुत ही प्रिय वस्तु को ममत्व को त्यागने का निर्णय लेते हैं और जब आप निर्णय लेते हैं तभी एक टेस्ट (परीक्षा) आता है। वह उसी मूल कारण से किसी न किसी रूप में आता है इसलिए उसे पूरी तरह त्यागने में बहुत मेहनत करनी पड़ती है। फिर एक दिन ऐसा आता है जब आप अपने मन और अपने दिल में निर्णय कर लेते हो कि यह चीज आपके लिए अच्छी नहीं है। आपने प्रगति की इतनी मेहनत की है और थोड़ा सा फिसलने से इतना खो देते हैं, प्रगति के लिए फिर एक्सट्रा पुरुषार्थ की आवश्यकता होती है। कभी-कभी आपके अपने ही संस्कार रुकावट बन जाते हैं। जब आपका किसी से ममत्व होता है तो उसके संस्कार एक रुकावट बन जाते हैं। कभी-कभी अपनी ही अज्ञानता या ज्यादा कॉम्प्लेक्स के कारण भूलें करते हैं। अगर आप सोचें कि समय कम है, फिर भी यह एक लम्बे समय तक सीखने की प्रक्रिया है। यह सीखने में समय लगता है कि आखरीन हमें अपने जीवन में एक ठोस निर्णय लेना होगा और जब वह अटलता आ जाती है तो समस्या हल हो जाती है। यह एक बार स्वीकार हो जाए तो समस्या का समाधान हो जाता है। अपने जीवन में, हम एक ही जीने का तरीका, एक ही संकल्प, एक ही रास्ते पर सफर कर सकते हैं, लेकिन ऐसा नहीं चलता है। हमें वैरायटी को स्वीकार करना होगा।

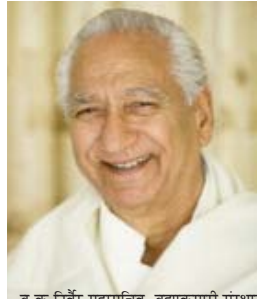
प्रश्न: वैराग्य का पूरा पहलू और अटल होना - सुनने में काफी सख्त और भारी लगता है। उसमें स्नेह कहाँ पर आता है?

उत्तर: बाबा के लिए, स्व के लिए और अन्य आत्माओं के लिए स्नेह है। किसी के लिए स्नेह हो तो स्नेह के कारण बलिदान करते हैं, यदि हम अपने को प्यार नहीं करते तो हम अपने लिए कुछ भी बलिदान नहीं करेंगे। पवित्र प्रेम आवश्यक है।

प्रश्न: त्याग से जुड़ा हुआ वैराग्य। यदि हम वैराग्य का शब्दावाद करें, तो वैराग्य का अर्थ होगा किसी भी बात में रुचि नहीं।

उत्तर: सन्यासियों को देखते हुए हम यह मानते हैं कि उन्होंने संसार का त्याग किया है, जबकि हम संसार में हैं। हम अपने कार्यालयों में जाते हैं, कमाते हैं और खर्चते हैं लेकिन जीवन के इस आध्यात्मिक पहलू को समझकर कि हमने अति सुंदर वस्तु पायी है, संसार या किसी कार्य (जॉब) को त्यागने की आवश्यकता नहीं है जब तक कि हम किसी अन्य तरीके से सेवा नहीं कर रहे हों। हमें अपने कार्य (जॉब) और अपने सम्बन्धों से वह आनंद लेने चाहिए जो अस्थायी या अल्पकालिक न हों।

यदि आप अपने संकल्पों और कर्मों के दृष्टा बन सकें, आप देखेंगे कि जब आपके संकल्प आध्यात्मिक मूल्यों के अनुचित, यथार्थ होते हैं, तो आप उससे बहुत आराम और चैन महसूस करेंगे और अन्य भी आपके साथ बहुत आराम महसूस करेंगे। जैसे ही किसी क्षण कोई बदलाव होगा (कोई निगेटिविटी बहुत सूक्ष्म रूप में आ जाती है) तो वह आपके मन में एक हलचल पैदा करना शुरू करती



-ब्र. कु. निर्वैर, महासचिव, ब्रह्माकुमारी संस्थान

है। वह चैन चला गया, वह खुशी का मूड चला गया, आपको आँखों में वह खुशी की मुस्कराहट चली गयी। उस समय एक पावरफुल ब्रेक की जरूरत है और बाबा का तुरंत ही आह्वान करने का सबसे आसान तरीका है : बाबा, मेरे मन में यह संकल्प आ रहा है, बाबा, यह संकल्प आ गया है और यह अच्छा नहीं है। जब आप इस तरह सोचेंगे, बाबा उस संकल्प को भी ले जायेगा और आपकी उत्कंठा को भी ले जायेगा। यह बहुत सूक्ष्म और बहुत आवश्यक है और हर पल मदद कर सकता है। धीरे-धीरे बाबा से तालमेल में रहना स्वाभाविक (नैचुरल) हो जायेगा और वह मुस्कराहट सदा आपकी आँखों में होगी।

प्रश्न: मैं यह कैसे पक्का करूँ कि मैं अपनी कमजोरियों को दबाऊँ नहीं? मुझे उनका आभास है और मैं दबा रहा हूँ।

उत्तर: अपनी कमजोरियों को एक कागज के टुकड़े पर लिखो और बाबा के हवाले कर दो। बाबा को दे दो तो वह जाने। आसान है। जब कुछ हो तो बाबा का आह्वान करो: बाबा, मेरी यह समस्या है, मुझे क्या करना चाहिए? आपको उत्तर मिल जाएगा। उस कागज के टुकड़े को बाबा के कमरे के डब्बे में डाल दो, यदि उनमें से कोई कमजोरी मन में दोबारा निकले तो फिर बाबा को मूरत का अपने मन की आँखों में आह्वान करो और बाबा से शेर करो कि वह आपने पहले से ही उन्हें दे दी है। उन्हें हटाने के लिए एक हफ्ता लगेगा और फिर तब से आप एक फरिश्ते की तरह सदा उड़ते रहेंगे - किसी भी बोझ के बिना।

प्रश्न: मेरे लिए ममत्व त्यागना सबसे मुश्किल काम है क्योंकि मैं सम्बन्धों को स्नेह प्रकट करने का एक साधन समझता हूँ। सम्बन्धों में प्यार बनाये रखते हुए मैं ममत्व को कैसे छोड़ सकता हूँ?

उत्तर: एक साथ भोजन करें, चिट-चैट करें और परिवर्तन होता हुआ देखें। उनके साथ समय बिताना ठीक है और यदि आप ऊँचे-ऊँचे विचार रख सकते हैं, तो उससे वातावरण और वायब्रेशन बनेगा। फिर उन रिश्तों से अपने को बचाने के बजाय साथ रहना ज्यादा आरामदायक होगा। जितना-जितना हम ममत्व को त्यागने का सोचते हैं, वह और ही बुरा हो जाता है। हमें बहुत रिलैक्स और नैचुरल रहना है। यदि कोई आपको फोन करता है, तो सुनिए और अच्छी तरह बोलिए और यदि आप उन्हें फोन करना चाहते हैं, तो करिए। आदान-प्रदान करना ममत्व नहीं है। अच्छे लोग आदान-प्रदान करते समय अच्छी बातों के बारे में बात करते हैं। हम उन बातों के बारे में बात नहीं करेंगे जो हमारे लिए अच्छी नहीं हैं।



नागपुर-महा.। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के महानगर संचालक के पद पर निर्वाचित होने के बाद सेवाकेन्द्र आने पर उन्हें गुलदस्ता भेंट करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र. कु. पुष्पारानी, ब्र. कु. करुणा, माउंट आबू तथा अन्य।



गोवा-मडगांव.। ग्रामविकास तथा वित्त मंत्री दीपक केशरकर को ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र. कु. सुरेखा। साथ हैं कोंकण रेलवे के एम.डी. भाूप्रताप तायल तथा अन्य।



गोवा-मालवन.। विधायक वैभव नायक को ईश्वरीय सौगत भेंट करते हुए ब्र. कु. सुरेखा। साथ हैं ब्र. कु. वर्षा तथा अन्य।



मुम्बई-वोरीवली.। 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना तथा हर घर में परमात्मा का परिचय' कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र. कु. प्रफुल्ला। मंचासीन हैं पूर्व विधायक व नगरसेवक बबन नाईक, अरिहंट गुप एंड ग्रेट एस्केप वाटर पार्क के चेयरमैन भारत गुप्ता, डी.वाई.एस.पी. वीरेन शाह तथा ब्र. कु. दिव्यप्रभा।



मुंदरा-कच्छ(गुज.)। आशापुरा कंपनी में 'स्ट्रेस फ्री लाइफ बाइ स्त्रीच्युअलिटो' विषय पर कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में डी. कुशावाहा, जी.एम. वर्क्स, मनीष पटेल, सिनियर मैनेजर, एच.आर., ब्र. कु. सुशीला, ब्र. कु. राजेश तथा अन्य।



उमरेंड.। 'मेरा उमरेंड स्वथ उमरेंड' कार्यक्रम के अंतर्गत मंच पर उपस्थित हैं ब्र. कु. डॉ. सचिन परब, डॉ. शिरीशा मेश्राम, डॉ. रेतकर, डॉ. गभने, डॉ. शंडवरे, ब्र. कु. रेखा तथा अन्य गणमान्य डॉक्टर।